P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पुराणों में व्यक्त ब्रह्मा के स्वरूप का विवेचन

पी.एस. बघेल
सह–प्राध्यापक,
शहीद भीमा नायक
शासकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
बड़वानी जिला बड़वानी (म.प्र.)

सारांश

अनेक महर्षियों ने पुराणों का लेखन किया है, जिनमें महर्षि व्यास प्रमुख है। ब्रह्मा को सृष्टिकर्ता माना जाता है। हिरण्मय ब्रह्माण्ड से ब्रह्मा की उत्पत्ति मानी जाती है, जो प्रारंभ में जल के आवरण से युक्त था, फिर तेज, वायु और आकाश के आवरण से ढँका है। ब्रह्मा ने ही स्वप्रेरणा से समस्त प्रकृति का निर्माण किया। स्थावर और जंगम पदार्थों और विभिन्न जीवों का निर्माणकर्ता ब्रह्मा को ही माना जाता है, यह सभी पुराणों ने कहा है।

प्रत्येक कल्प के अंत में ब्रह्मा ही समस्त प्रकृति का विनाश करते है और पुनः नई सृष्टि का संकल्प करते है। क्षीरसागर में भगवान् विष्णु शेषशय्या पर लेटे है। लक्ष्मी उनकी चरण सेवा में रत है। उनकी नाभि से उत्पन्न कमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई है। वस्तुतः नारायण भगवान् ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों में कार्य विभाजन के आधार है। ब्रह्मा उत्पत्ति के लिए, विष्णु पालन के रूप में तथा शिव विनाश के लिए अपनी–अपनी भूमिका का निर्वाह करते है।

मुख्य शब्द : नारायण भगवान, पुराण, ब्रह्मा।

प्रस्तावना

पुराणों के वर्णन में महर्षि वशिष्ठ, महर्षि भृगु एवं महर्षि व्यास ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन किया है। महर्षि वेद व्यास ने पुराणों का श्रवण किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

क्षीर सागर में शेषशय्या पर भगवान् विष्णु सोये है। उनकी नाभि से कमल की उत्पत्ति हुई है, उसी कमल से ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई है। पुराणों के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु, महेश कार्य विभाजन की दृष्टि से त्रिदेव माने जाते है, किन्तु ये तीनों एक ही है जिनके बारे में प्राचीन महर्षियों ने विभिन्न पुराणों में ब्रह्मा के स्वरूप का विवेचन किया है।

सृष्टि की उत्पत्ति में ब्रह्मा को ही सर्वप्रथम पुरुष माना है। हिरण्मय ब्रह्मण्ड से ही ब्रह्म की उत्पत्ति हुई है। हिरण्मय ब्रह्माण्ड जल के आवरण से आवृत है, जल पर तेज का आवरण है। उस तेज से वायु का आवरण और उससे ऊपर आकाश का आवरण है। सारा ब्रह्माण्ड भूतादि अहŠार से ढँका है और उसी से महत् तत्त्व आवृत है। इस प्रकार सभी लोकों की उत्पत्ति उस ब्रह्माण्ड से ही हुई है।

'अण्डे हिरण्मयेपूर्वं ब्रह्मणः सूतिरुत्तमा।
अण्डस्यावरणं चाद्भिरपामपि च तेजसः।
वायुना तस्य वायोः खात्तद्भूतादित आवृतम्।
भूतादिर्महता चापि अव्यक्तेनावृतो महान्।।'

उसी ब्रह्माण्ड से नदियों और पर्वतों की उत्पत्ति बतलाई गई है। स्वर्ग और मृत्युलोकों का वर्णन है। मृत्यु लोक में अनेक जीवों की उत्पत्ति हुई है।

सर्ग और प्रतिसर्गों के वर्णन के रूप में सृष्टि का निर्माण और क्षय का विवरण किया है।

'ब्रह्मा त्र्यैलोक्यपूजितः
तयोस्तद्वचनं श्रुत्वा विवोध्य गतयोः परम्।
त्रीनिमान्कृतवान् लोकान् यथेयं ब्रह्मणः श्रुतिः।।'

सभी भूतों में प्रधान तथा त्रैलोक्य पूजित ब्रह्माजी उन दोनों की वाणी सुनकर समाधि से जागकर वेद श्रुति के अनुसार तीनों लोकों की सृष्टि का निर्माण किया।

'ततो ब्रह्मा भुवर्नाम द्वितीयमसृजत्प्रभुः।
संकल्पयित्वा मनसा तमेव च महात्मना।।'

उसके बाद ब्रह्माजी ने दूसरे भुव की सृष्टि की। महामना ब्रह्माजी ने मन से ही सŠल्प कर के सृष्टि की।

ब्रह्मण्डपुराण में भी ब्रह्मा द्वारा सृष्टि निर्माण की इसी अवस्था का निर्माण बताया है।

"कल्पे कल्पे च भूतानां महतामपि संक्षयम्।
असंख्यया च दुःखानि ब्रह्मणश्चापि अनित्यत्।।"

अर्थात् महत्तत्व और सभी भूलों का कल्प कल्प में सम्यक् विनाश। असंख्या से दुःख और ब्रह्मा की अनित्यता वर्णित है।

"आदिकर्ता स भूतानां ब्रह्माग्रे समवर्त्तिनाम्।"

वह पुरुष ही ब्रह्मा के आगे 'सम्वर्तमान भूतो'(आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी) का आदिकर्ता है।

"नारायणात्परो व्यक्तादण्डमव्यक्त संज्ञितम्।
अण्डजस्तु स्वयं ब्रह्मा लोकस्तेन कृताः स्वयम्।।'

नारायण से पर अव्यक्त से अव्यक्त संज्ञित अण्डा उत्पन्न हुआ तथा उस अण्डे से स्वयं ब्रह्मा उत्पन्न हुए, फिर उन ब्रह्मा ने स्वयं लोकों को पैदा किया।'

"कल्पानां परमेष्ठित्त्वातस्मादाद्य पठ्यते।।"

अर्थात् कल्पान्त में एक ब्रह्मा ही परम शेष है, वे ही आद्य पुरुष है।

विष्णुपुराण में भी ब्रह्मा को ही आद्य सृष्टिकर्ता माना है। विष्णु भगवान् ही ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र का रूप धारण करते है। ब्रह्म के रूप में सृष्टि–निर्माण, विष्णु संसार का पालन और रुद्र संसार का विलय करते है। मैत्रेय जी कहते है–

"तमोद्रेकी च कल्पाते रुद्ररूपी जनार्दनः।
मैत्रेयाखिलभूतानि भक्षयत्यतिदारुणः।।
भययित्वा च भूतानि जगत्येकार्णवीकृते।
नागपर्यŠ शयने शैते च परमेश्वरः।।
प्रबुद्धश्च पुनः सृष्टिं करोति ब्रह्मरूपपृथक्।"

अर्थात् हे मैत्रेय! कल्प के अंत होने पर अति दारुण तम प्रधान रुद्र रूप धारण कर के वे जनार्दन विष्णु ही समस्त भूतों का भक्षण कर लेते है।

भूतों के भक्षण कर संसार को जलमग्न कर के वे परमेश्वर शेष शय्या पर शयन करते है। जगने पर फिर जगत् की रचना करते है। श्रीमद्भागवतपुराण में ब्रह्मा ने ही सृष्टि रचना करने का उल्लेख प्रतिपादित किया है।

"यस्याम्भसि शयानस्य योगनिद्रां वितन्वतः।
नाभिह्रदाम्बुजादासीत् ब्रह्मा विश्वसृजां पतिः।"

उन्होंने ही इस कारण जल में शयन करते हुए जब योगनिद्रा का विस्तार किया, तब उनके नाभि सरोवर में से एक कमल प्रकट हुआ और उस कमल से प्रजापतियों के अधिपति ब्रह्माजी उत्पन्न हुए।

सृष्टि उत्पन्न होने के पूर्व यह सम्पूर्ण विश्व जल में डूबा हुआ था। उस समय एक मात्र श्री नारायण शेष शय्या पर योग निद्रा में डूबे हुए थे। सहस्र युग तक जल में शयन कर उठने पर पुनः सृष्टि निर्माण का चिन्तन करने लगे।

"तस्य नाभेः समभवत् पद्मकोशो हिरण्मयः।
तस्मिञ्जज्ञे महाराज स्वयंभूश्चतुराननः।।"

महाराज! उनकी नाभि से (विष्णु की नाभि से) एक सुवर्णमय कमलकोष प्रकट हुआ। उसी में चतुर्मुख ब्रह्माजी का आविर्भाव हुआ।

"ब्रह्म विष्णुस्तथेशानो देवताः प्रभुरव्ययः।।
ब्रह्मा सृजति भूतानि स्थावरं जङ्गमं च यत्।
तान्येताभि परं लोके विष्णुः संवर्धते प्रज्ञा।
कल्पान्ते तत् समग्रं हि रुद्रः संहरते जगत्।।"

यहाँ अविनाशी एवं सामर्थ्यशाली ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा सम्पूर्ण देवता वास करते है, ब्रह्मा जिन स्थावर–जंगम रूप प्राणियों की सृष्टि करते है, उन सभी प्रजाओं का इस लोक में विष्णु पालन करते है, तथा कल्पान्त में रुद्र इस सारे जगत् का संहार करते है।

"तुल्यं युगसहह्रस्य नैशकालयुपास्य सः।
शर्वर्यन्ते प्रकुरुत्ते ब्रह्मत्त्वं सर्गकारणात्।।"

वे ही हजारों युगों के बराबर निशाकाल बीच जाने पर रात्रि के अन्त में सृष्टि के लिए ब्रह्मा का रूप धारण करते है।

"बीजार्थेन स्थितास्तत्र पुनः सर्गस्य कारणात्।
ततस्ताः सृज्यमानास्तु संतानार्थ भवानि हि।।"

ब्रह्म कल्पान्त में भी ब्रह्मा के द्वारा ही सृष्टि रचना का कार्य निष्पादन करने का उल्लेख अन्य पुराणों की तरह किया गया है। 'ततः स्वयम्भूगवान् सिसृक्षुर्विविधाः प्रजाः।'

"अप एव ससर्ज्जादौ तासु वीर्य्यमथा सृजत्।
आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वे नर सूनवः।
अयनं तस्य ताः पूर्व्व तेन नारायणः स्मृतः।
हिरण्यबर्णमभवतदण्डमुदकेशयम्।।
तत्र जज्ञे स्वयं ब्रह्मा स्वयम्भूरिति नः श्रुतम्।
हिरण्यवर्णो भगवानुषित्वा परिवत्सरम्।।
तदण्डमकरोद्द्वैधं दिवे भुवनयापिन्वा।।"

स्वयंभू भगवान् ने अनेक प्रकार की प्रजाओं को उत्पन्न करने की इच्छा से पहले जल की सृष्टि की। उसम बीज डाला, 'नार' शब्द जल–राशि और नर पुत्रों दोनों अर्थों में प्रयुक्त होता है।

उस परम पुरुष का आश्रय पहले जल राशि ही थी। इसलिए उसकी नारायण कहा गया। जल में सोये हुए परम पुरुष की नाभि से एक सुवर्णमय अण्डा उत्पन्न हुआ। उससे स्वयंभू ब्रह्मा उत्पन्न हुए। हिरण्यगर्भ भगवान् ने अनेक वर्षों तक वास करके उस अण्डे को स्वर्ग और पृथ्वी इन को टुकड़ों में विभक्त कर किया।

फिर छोटे–बड़े सभी प्राणी ब्रह्माजी से उत्पन्न अण्डे से पैदा हुए।

"द्विधा कृत्वात्मनो देहमर्द्धेन पुरुषोऽभवत्।
अर्द्धेन नारी तस्यां तु सोऽद्विजाद्विविधाः।।"

ब्रह्म ने अपने देह के दो भाग किये। आधे भाग से पुरुष बना और आधे भाग से स्त्री बनायी।

अग्निपुराण में भी जगतसृष्टि का वर्णन इसी प्रकार किया गया है। सर्वप्रथम सत्स्वरूप ब्रह्म ही थे। उस समय न आकाश का था, न रात्रि थी और न दिन ही थे। तब अव्यक्त प्रकृति से त्रिगुणात्मक सृष्टि निर्मित हुई। सात्विक, राजस और तामस उत्पन्न हुआ। महत्तत्त्व से अहंकार पैदा हुआ। इसी से त्रिगुण उत्पन्न हुए। दस इन्द्रियों तथा उनके दस अधिष्ठाता तथा ग्यारहवाँ मन– ये सब सात्विक अहंकार से उत्पन्न हुए।

'ततः स्वयम्भूर्भगवान् सिसृक्षुर्विविधाः प्रज्ञाः।।'

तब स्वयंभू भगवान् ब्रह्मा ने नाना प्रकार की प्रजाओं को उत्पन्न किया।

'हिरण्यवर्णमभवत्तदण्डमुदकेयम्।'

उस जल से ही सुनहरा अण्डा उत्पन्न हुआ। उससे साक्षात् ब्रह्म की उत्पत्ति हुई जो स्वयम्भू के नाम से विख्यात हुआ। भविष्य महापुराण में भी स्वयंभू भगवान् ब्रह्मा ने सर्वप्रथम मन की सृष्टि की। पश्चात् अहŠार, उससे पंच महाभूत आठों प्रकृतियाँ और सोलह विकार उत्पन्न हुए।

कूर्मपुराण में भी ब्रह्मा जी ने सृष्टि निर्माण करने का उल्लेख किया है।

'चिन्तयामि पुनः सृष्टिं निशान्ते प्रतिबुद्ध तु।।'

वे नारायण शेष शय्या पर योगनिद्रस्थ रथे। वे जागकर सृष्टि विषयक चिन्तर करने लगे। अन्य पुराणों की भाँति लिङ्गपुराण में भी सृष्टि रचना की यही कथा वर्णित है। उसी प्रकार वराहपुराण और स्कन्दपुराण में भी सृष्टि निर्माण की कथा कही गयी है।

निष्कर्ष

वस्तुतः ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों ही एक रूप ही है। पुराणों ने कार्य विभाजन की सृष्टि से तीनों देवताओं का भिन्न–भिन्न व्यक्तित्व दर्शाया है।

पद्मपुराण के भूमि खण्ड में निम्नांकित श्लोक में ब्रह्मा विष्णु महेश्वर के एक रूप में ही दर्शाया है–

'एक मूर्तिस्त्रयो देवाः ब्रह्मा विष्णु महेश्वराः।
त्रयाणामन्तरं नास्ति गुण भेदा प्रकीर्तिताः।'

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *पद्मपुराण, सृष्टि खण्ड, 2.9.10*
2. *पद्मपुराण/ सृष्टिखण्ड/40.54*
3. *पद्मपुराण, सृष्टिखण्ड, 40.61*
4. *ब्रह्माण्ड 1/143*
5. *ब्रह्माण्ड1/3/25*
6. *ब्रह्मा. 1/5/109*
7. *उत्तर. ब्रह्मा. 1/188*
8. *विष्णु. 1.3.63–64*
9. *भाग. 1/3/20*
10. *भाग. 9.1.9*
11. *मत्स्य.111–2,3,4*
12. *वायु. 6.6*
13. *वायु. 8.25*
14. *ब्रह्मपुराण 1.37*
15. *ब्रह्म. 1.52*
16. *अग्नि. 11.6*
17. *अग्नि. 17.8*
18. *कूर्म. 2.4*
19. *पद्मपुराण/भूमिखण्ड*